भजन

तर्ज–अब तो है तुमसे

रस भरी रसना,अपने प्रीतम की
जो पिलाती है ,ताम निसबत की

1–गुण रसना क्या कहूं,एक में अनेक है
कहनी में है बहुत, पर रसना एक है
ये सुख वो ही जाने,जिसने सुख लिए

2–गुझ हक के दिल का, मुख बोले पाइये
मीठे हक मीठी रसना, सुख हमेशा होए

3–माशूक प्यारे जिन्हे, वचन प्यारे लागे उन्हें
तन रूह जिनके लगे ,छेद निकसे बाण उन्हें
मुख से ना कुछ बोले, रुह वचन लागे जाये